आलोचक चौथीराम यादव

रीना यादव

हजारी प्रसाद द्विवेदी की आलोचना दृष्टि का विकास नामवर सिंह के रूप में हुआ और उसी परम्परा की अगली कड़ी के रूप में चौथीराम यादव जी हुए। इस प्रसंग में सदानंद शाही के मन्तव्य को उद्धृत किया जाना समीचीन प्रतीत होता है–''नामवर सिंह ने जिस 'दूसरी परम्परा' का आविष्कार किया था, चौथीराम यादव ने उस दूसरी परम्परा की रक्षा ही नहीं बल्कि विस्तार भी दिया। चौथीराम जी ने इस पूरी परम्परा को बृहद सामाजिक क्रांति के रूप में देखा और परिभाषित किया है। वे बुद्ध को इस सामाजिक आन्दोलन का पहला चरण, भक्ति आन्दोलन को दूसरा तथा दलित और स्त्री मुक्ति आन्दोलन को तीसरा चरण मानते हैं। चौथीराम यादव की विकास यात्रा बुद्ध, कबीर, अम्बेदकर की निरन्तरता को लक्षितऔर परिभाषित करने की यात्रा है। कहना होगा कि इस राह के पथिक को शास्त्र को जड़ सूत्र की तरह पकड़े रहने वाली परम्परा से बार–बार टकराना होगा। लोक और वेद आमने सामने शीर्षक से संकलित निबंध इस टकराहट के परिणाम हैं। वर्चस्व की संस्कृति ने लोकधर्मी साहित्य को निरस्त करने के लिए तरह तरह के औजार विकसित किए हैं। चौथीराम जी इस तरह की परियोजना को न केवल पहचानते हैं बल्कि उसका प्रतिपाठ प्रस्तुत करते हैं। वे अवतारवाद के वरक्स लोकधर्म को प्रस्तावित करते है। निर्गुण संत केवल खंडन मंडल करते हैं, इस मिथ को तोड़ने के लिए चौथीराम यादव संतो ंके सपनों के समाज की चर्या करते हैं। इसी तरह पुरूष पाठ ही प्रथम पाठ हैं को ध्वस्त करने के लिए मीराबाई के मुक्ति संघर्ष में निहित नारी जागरण को चिन्हींत करते हैं और इस तरह हिन्दी साहित्य की समूची परम्परा को नया परिप्रेक्ष्य देते हैं। चौथीराम यादव की यह पुस्तक विचार के लिए आमंत्रित करती है और रूढ़ि बद्ध धारणाओं पर पुनर्विचार की प्रेरणा देती है।